बाल भारती पब्लिक स्कूल, पीतमपुरा, दिल्ली ११००३४

हिंदी

कक्षा-नवीं

दुःख का अधिकार

अभ्यास पत्रिका

प्रिय विद्यार्थियो!

आज हम स्पर्श भाग-I में संकलित यशपाल जी द्वारा लिखित कहानी 'दुःख का अधिकार' के विषय में बात करेंगे।

पाठ्य सामग्री अध्ययन करते समय निम्नलिखित निर्देशों का पालन करें ---

निर्देश :

1. उपर्युक्त पाठ के अध्ययन के लिए निम्नलिखित लिंक का प्रयोग कीजिए।

https://www.youtube.com/watch?v=n9XJKw9XuwY

(स्पर्श भाग १)

http://ncert.nic.in/textbook/textbook.htm?ihsp1=2-13

दुःख का अधिकार (पाठ १ PDF)

https://drive.google.com/file/d/1k-kj5S5tn0ZfNn78EVdUkFvMYHicfL4H/view

2. विद्यार्थी पाठ से सम्बंधित प्रश्न हिंदी की उत्तर पुस्तिका (नोटबुक) में करेंगे।

BBPS, PITAMPURA

3. स्कूल खुलने के पश्चात् दिए गए अभ्यास प्रश्नों का परीक्षण करके अंक/ग्रेड दिए जायेंगे।

<u>परिचय - पाठ का सारांश</u>

पाठ - दुःख का अधिकार

यह कहानी देश में फैले अंधविश्वासों और ऊँच -नीच के भेदभाव को बेनक़ाब करते हुए यह बताती है कि दुख की अनुभूति सभी को समान रूप से होती है। 'कहानी धनी लोगों की अमानवीयता और गरीबों की मज़बूरी को भी पूरी गहराई से उजागर करती है। यह सही है कि दुख सभी को तोड़ता है ,दुख में सब अवश हो जाते हैं ,पर इस देश में ऐसे भी अभागे लोग हैं जिन्हें न तो दुख मनाने का अधिकार है,न अवकाश। दुख भी वे ही मना सकते हैं जिन के पास भरण -पोषण के खूब साधन हैं। जिन्हें रोज़ कमाना और रोज़ पेट भरना पड़ता है ,वे भला किसी बड़े से बड़े आघात के लिए भी शोक मनाने का अवकाश कहाँ जुटा पाते हैं।

साग -सब्जी उगाकर और बेचकर अपने परिवार का भरण -पोषण करने वाली एक अधेड़ औरत पर उस दिन दुखों का पहाड़ टूट पड़ता है जब एक साँप के काटने से उस के जवान बेटे भगवाना की अकाल मृत्यु हो जाती है। बेटे के कफ़न -दफ़न का इंतज़ाम करने में माँ का इकलौता गहना भी बिक जाता है। घर में न खाने को कुछ है ,न कमाकर लानेवाला ही बचा है। जिन ख़रबूज़ों को बेचने के दौरान बेटा उस जानलेवा दुर्घटना का शिकार हुआ था ,उन के अलावा घर में ऐसा कुछ नहीं था जिसे बेचा जा सके,इसलिए उन्हें लेकर बाज़ार बेचने के लिए जाती है

BBPS,PITAMPURA

,बाज़ार में बैठते ही बेटे को याद करके फूट-फूटकर रोने लगती है। उसे वहाँ आया देखते ही आसपास के दुकानदार उसका अपमान करते हैं।

लेखक जब दुकानदारों से उस के रोने का कारण तथा वे बुढ़िया का उपहास क्यों उड़ा रहे हैं ये जानना चाहता है तो वे बताते हैं कि इसका जवान बेटा कल ही गुज़रा है, मगर यह कमाई की इतनी भूखी है कि उसका शोक मनाने की जगह यह बाज़ार में दुकानदारी करने आ बैठी है। लेखक को यह जानकर हैरानी नहीं होती कि ये लोग अपना बेटा खो चुकी उस माँ के प्रति ज़रा भी सहानुभूति नहीं रखते। उसे याद अत है कि उसकी एक परिचित अमीर महिला का बेटा गुज़रा था तो वह महीनों तक शोक के सागर में डूबी रही थी। लेखक को एहसास हुआ कि यहाँ तो दुःख मनाने का अधिकार भी सबको नहीं है। दुःख भी वे ही मना सकते हैं जिनके पास भरण-पोषण के खूब साधन हैं। जिन्हें रोज़ कमाना और रोज़ पेट भरना पड़ता है, वे भला किसी बड़े से बड़े आघात के लिए भी शोक मनाने का अवकाश कहाँ जुटा पाते हैं।

शब्द	**अर्थ**
ईमान	सच्चाई
बेचैनी	व्याकुलता
ज़मीन	भूमि
बदन	शरीर
गम	दुःख
ज़माना	संसार
अंदाज़ा	अनुमान
दर्ज़ा	स्तर

शब्द	**अर्थ**
बरकत	वृद्धि
अकाल	असमय
उपहास	मज़ाक
शोक	दुःख
ज़रा	थोड़ी
परिचित	जानकार
आघात	चोट
अपमान	तिरस्कार

BRS PITAMPURA

निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर संक्षेप में उत्तर लिखें-

- बाज़ार में, फुटपाथ पर कुछ ख़रबूज़े डलिया में और कुछ ज़मीन पर बिक्री के लिए रखे जान पड़ते थे। ख़रबूज़ों के समीप एक अधेड़ उम्र की औरत बैठी रो रही थी। ख़रबूज़े बिक्री के लिए थे, परन्तु उन्हें खरीदने के लिए कोई कैसे आगे बढ़ता ? ख़रबूज़ों को बेचने वाली तो कपड़े से मुँह छिपाये सर को घुटनों पर रखे फ़फ़क-फ़फ़ककर रो रही थी। पड़ोस की दुकानों के तख्तों पर बैठे या बाज़ार में खड़े लोग घृणा से उस स्त्री के संबंध में बात कर रहे थे। उस स्त्री का रोना देखकर मन में एक व्यथा सी उठी, पर उसके रोने का कारण जानने का उपाय क्या था ? फुटपाथ पर उसके समीप बैठ सकने में मेरी पोशाक ही व्यवधान बन खड़ी हो गयी।

  क) बाज़ार में लोग कहाँ-कहाँ थे और क्या कर रहे थे ?

  ख) कोई ख़रबूज़ों को खरीदने के लिए आगे क्यों नहीं बढ़ रहा था ?

  ग) लेखक उस स्त्री के विषय में क्या जानना चाहता था ?

  घ) लेखक स्त्री के रोने का कारण क्यों न जान सका?

- पास-पड़ोस की दुकानों से पूछने पर पता लगा - उसका तेईस बरस का जवान लड़का था। घर में उसकी बहू और पोता पोती हैं। लड़का शहर के पास डेढ़ बीघा ज़मीन पर कछियारी करके परिवार का निर्वाह करता था। ख़रबूज़ों की डलिया बाज़ार में पहुँचाकर कभी लड़का स्वयं सौदे के पास बैठ जाता, कभी माँ बैठ जाती। लड़का परसों सुबह मुँह-अँधेरे बेलों में से पके ख़रबूज़े चुन रहा था। गीली मेढ़ की तरावट में विश्राम करते हुए एक सांप पर लड़के का पैर पड़ गया। साँप ने लड़के को डस लिया।

BBPS, PITAMPURA

क) पूछताछ करने पर लेखक को क्या पता चला ?

ख) उस अधेड़ औरत के घर का खर्च कैसे चलता था ?

ग) बेटा ख़रबूज़े कब चुन रहा था ?

घ) बेटे की मौत का कारण क्या था ?

संस्कृत शब्द बिंदु को उर्दू में 'नुक्ता' कहते हैं तथा इसे व्यंजन वर्ण के नीचे लगाया जाता है जैसे 'इजाज़त , राज़'।

उपर्युक्त अनुच्छेद में से नुक्ता के पांच शब्द छाँट कर लिखिए।

परियोजना कार्य-

वाद-विवाद का विषय - पोशाक

निम्न बिंदुओं को ध्यान में रखकर विद्यार्थी अपना पक्ष मज़बूत करेंगे।

पक्ष में -

१. पहचान और प्रतिष्ठा अच्छी पोशाक से

२. समाज में पोशाक से ही पहचान

३. हर व्यक्ति बड़ा और अच्छा दिखना चाहता है।

४. अच्छे संपर्क बनाने में अच्छी पोशाक सहायक

५. उदाहरण - उद्योगपतियों, अभिनेताओं, खिलाडियों, मॉडल्स आदि का पहरावा

BBPS.PITAMPURA

विपक्ष में-

१. अच्छी पोशाक तहज़ीब और गुणों की परिचायक नहीं।

२. इज़्ज़त गुणों से होती हैं, पोशाक से नहीं।

३. गाँधी जी सादी धोती पेहेनते थे लेकिन दुनिया पूजती थी।

४.सुदामा गरीब था फिर भी कृष्ण से उनकी विद्वत्ता को अपनाया।

५. पोशाक सिर्फ तन ढकती है, इसका सद्गुणों से कुछ लेना देना नहीं।

----------x----------

BBPS,PITAMPURA